ज्योत्स्ना मिलन के उपन्यास विधा में चित्रित नारी की समस्याएँ

कुमारी शकुंतला दशरथ कुंभार शोध छात्रा,शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर Shakuntalakumbhar10@gmail.com

---

शोध सार:

आज तक हिंदी साहित्य जगत में अनेक समस्याओं पर विचार मंथन हुआ है। मनुष्य से जुड़ी हर समस्या को हिंदी साहित्य का विषय बनाया गया है। उसमें अगर नारी जीवन का विचार किया जाए, तो नारी जीवन पर अनेक समस्याओं का चित्रण हिंदी साहित्य के अनेक विधाओं के माध्यम से हुआ है। लेकिन ज्योत्स्ना मिलन के साहित्य की नारी आम नारी है, जो अपने जीवन में कई सारी समस्याओं का सामना करती है। आम नारी से जुड़ी हर एक समस्या को, बारीकी से चित्रित करने का काम ज्योत्स्ना मिलन ने किया है, जो अन्य लेखकों से उनको अलग बना देता है। यही समस्याएँ आज नारी जीवन की प्रासंगिकता को भी दर्शाती है तथा उसके जीवन की यथार्थता को स्पष्ट करती है। विवेच्य साहित्य में विधवा समस्या, सामाजिक, अनमेल विवाह, अंधविश्वास, भावनिक समस्या आदि समस्याओं का चित्रण किया है।

बीज शब्द: अनमेल, संघर्ष, छटपटाहट, अधेड़

प्रस्तावना:

मनुष्य जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। जीवन के हर पथ पर उसे संघर्ष करना पड़ता है। बिना संघर्ष के मनुष्य जीवन की कोई सार्थकता नहीं होती। इसमें अगर नारी जीवन पर विचार किया जाए, तो अन्य जीवों से ज्यादा संघर्ष तथा मुश्किलें नारी जीवन में आती हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक का उसका सफर संघर्ष से तथा समस्याओं से भरा हुआ है। हर पड़ाव पर जीवन उसके लिए एक चुनौती बन जाता है। जीवन का हर पथ उसके लिए समस्याओं से भरा होता है। ज्योत्स्ना मिलन का साहित्य अधिक मात्रा में नारी केंद्रित है। आम नारी से जुड़ी अनेक समस्याओं का चित्रण उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से किया है।

'अपने साथ' उपन्यास में केका की पड़ोसन अम्मा की बहू बिल्वा और उसके बीच के संवाद को लेकर सास-बहू की समस्या के माध्यम से पारिवारिक समस्या को दर्शाया है। जब केका अम्मा से बात कर रही थी तो, बिल्वा को लगा कि केका का इस तरह का लगाव मेरे साथ भी होना चाहिए। इसी लिए वह केका को पराठे बनाकर देना चाहती है। मगर केका बात को टाल देती है। ऊपर से अम्मा कहने लगती है, "आज की बहू में बेटों के समान, उसकी माँ को माँ तो कहती है, मगर सास के साथ माँ जैसा व्यवहार बिलकुल नहीं करती।"[1] इस बात को चढ़ाती हुई केका इसका जवाब देती है, बहू बेटी की तरह पेश आनी चाहिए तो, सास को भी माँ की तरह बर्ताव करना होगा। यहाँ सास-बहू के बिगड़ते संबंधों की समस्या को चित्रित किया है, जो आज भी भारतीय समाज के परिवारों की सबसे बड़ी वास्तविक समस्या है।

'केशर माँ' उपन्यास में लेखिका ने पारिवारिक समस्या को चित्रित किया है। जहाँ बड़े तथा निर्धन परिवार की समस्या आती है। परिवार बड़ा और निर्धन होने के कारण इस उपन्यास की केशर को ऐसे व्यक्ति से शादी करनी पड़ती है, जो अधेड़ उम्र का है। उसके माँ-बाप को इस बात का पता है, कि केशर की शादी हो जाने पर कुछ दिनों के बाद ही उसके पति का देहांत हो जाएगा। इतनी बड़ी सच्चाई पता होने के बावजूद भी केशर का विवाह उस व्यक्ति से किया जाता है। केशर की स्थिति से भारतीय परिवारों की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है, जहाँ आज भी भारतीय परिवारों में बेटी को बोझ समझा जाता है। आज शिक्षा के कारण अनेक बदलाव जरूर आए हैं, मगर परिस्थितियाँ बदली है, ऐसा हम नहीं कह सकते।

'अपने साथ' उपन्यास में ज्योत्स्ना मिलन ने सामाजिक समस्या को चित्रित किया है। समाज में जब एकाध औरत अकेली दिखती है, तो आने-जाने वाले लोग उसके साथ किस तरह पेश आते हैं, उसके साथ किस तरह का व्यवहार करते है, यह चित्रित किया है। एकाध औरत अगर रास्ते में अकेली नजर आई, तो उसे कई तरह के सवाल पूछे जाते हैं। उसे परेशान किया जाता है। उपन्यास की नारी केका के साथ भी ऐसा ही होता है। एक दिन केका जब रात को अपने बेटे के साथ वापस घर लौट रही थी, तब बीच में उनके पड़ोसी सिन्ना साहब मिल जाते हैं और उसे पूछते हैं, आप अकेली कैसी? उनके इस सवाल के पीछे मानो कई सारे सवाल थे। उसके पीछे यह भी सवाल था, आपका पति कहाँ है? कब आएगा? कहाँ गया है? ऐसी बहुत बड़ी सवालों से भरी श्रृंखला हो सकती थी। इन सवालों के सही-सही जवाब केका देना नहीं चाहती थी। अगर सच बताया जाए तो, कई सारे सवाल उठ सकते थे, झूठ बोला जाए तो, भी इससे बचा नहीं जा सकता था। लेकिन इस तरह की बेहूदा स्थिति से बचने के लिए वह झूठ ही बोल देती है। यही स्थिति कई बार भारतीय स्त्रियों की होती रहती है। इसे वास्तविक समस्या के रूप में लेखिका ने चित्रित किया है। जिसे भारत की हर नारी को किसी ना किसी रूप में कई बार इसका सामना करना पड़ता है।

विवेच्य उपन्यास में सोलह साल की लड़की का विवाह बिरजू से होता है। बिरजू एक बनिया है। घर वाले भी काफी सख्त है। बिरजू की पत्नी गर्भवती थी, तब उसके मायके वाले कई बार बुलाने के लिए आए, मगर उसकी सास ने भेजने से इनकार किया। सास को लगता, अगर बहू चली जाएगी तो, घर का सारा काम कौन करेगा? उस बेचारी की शादी को केवल एक ही साल हुआ था। अचानक उसकी मौत हो जाती है। काम का बोझ उठाते-उठाते वह और उसके पेट में जो बच्चा था वह भी मर जाता है। यहाँ अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित करते हुए लेखिका ने समाज में चली आ रही अनिष्ट प्रथाओं को तथा समाज में बहू यानी स्त्री के प्रति व्यवहार को वास्तविक रूप में चित्रित किया है। आज नारी शिक्षा के कारण आत्मनिर्भर जरूर हुई है, मगर घरेलु नारी की स्थिति आज भी बदलना जरूरी है।

'केशर माँ' उपन्यास में 'अनमेल विवाह' की समस्या को चित्रित किया है। केशर का विवाह ऐसे व्यक्ति से होता है, जिसकी उम्र अधेड़ है और सबसे बड़ा सच यह था, कि शादी के कुछ दिनों बाद उसके पति की मृत्यु होने वाली थी। सब कुछ जानते हुए भी केशर के विवाह की चिंता से उसके माता-पिता ने गलत इंसान से उसकी शादी करवा दी। इसका पूरा परिणाम उसे जिंदगी भर भुगतना पड़ा। जो दिन उसके रंगीन थे, शादी के कुछ महीनों बाद बेरंग बन गए। सिवाय सफेद और काले रंग के सिवा जीवन में कुछ रहा नहीं। केशर माँ की जिंदगी बरबाद हो जाने का एकमात्र कारण था अनमेल विवाह। आज भी समाज में इस तरह के विवाह होते हैं। कुछ मात्रा में नारी आत्मनिर्भर बनी है, मगर आम नारी के संदर्भ में आज भी स्थितियाँ नहीं बदली हैं। आज भी कई परिवारों की लडकियों को अपने जीवन का निर्णय लेने का अधिकार ना होने के कारण उन्हें अनमेल विवाह का शिकार होना पड़ता है।

'अपने साथ' उपन्यास में ज्योत्स्ना मिलन ने समाज में चित्रित अंधविश्वास को चित्रित किया है। उपन्यास की केका को रेणु का पत्र आता है, तब वह पत्र में लिखती है, कि मुझे अभी बच्चा नहीं चाहिए। अभी मैं थिसिस लिखने में व्यस्त हूँ। आजकल बच्चा होना या दो बच्चे होना उस परिवार पर निर्भर होता है। केका तो चाहती है, कि उसका दूसरा बच्चा हो। लेकिन उसके मन में ख्याल आता है, कि जिनके बच्चे नहीं होते, वे बच्चों को पाने के लिए पाँच उँगलियों से महादेव जी की पूजा करते हैं। मंदिर में होने वाले पेड़ पर मन्नत माँगते हैं और उसे बहुत सारे धागे तथा चिथड़े बाँधते हैं। कभी-कभी ब्राह्मण भोज तथा दान भी करते हैं। उनको लगता है, कि ऐसा करने से उनकी पत्नी को बच्चे हो जाएँगे। इससे स्पष्ट होता है कि आज भी नारी को अनेक अंधविश्वासों का शिकार बनना पड़ता है। जो आज भी कई शिक्षित-अशिक्षित लोगों में पाया जाता है और जिसका शिकार ज़्यादातर केवल औरतें बनती हैं।

'अपने साथ' उपन्यास में ज्योत्स्ना मिलन ने विधवा समस्या को चित्रित किया है। केका जिस मोहल्ले में रहती है, गंगा चाची भी वहीं रहती थी। उसकी उम्र पचास के आसपास थी। लेकिन पिछले दो सालों से उसके वर्तन में काफी बदलाव आया है। जब देखो तब गंगा चाची आईने के सामने खड़ी होकर सजती-सँवरती है। मोहल्ले के बूढ़े जब उसके पीछे घूमते हैं, तो अखरने लगती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बावजूद भी वह बेचारी बन जाती है। ऐसा लगता है, कि इसके लिखा-पोती के पीछे कितना सारा दर्द है। कितनी सारी छटपटाहट छिपी हुई है। जो जिंदगी उसने जी नहीं थी, वही जिंदगी जीने का मन करने लगता है। एक विधवा की जिंदगी कितनी उलझन भरी होती है। वह कितनी उलझनों का सामना करती है। जब अपने जीवन को नए सिरे से जीना चाहती है, तब समाज का सामना वह नहीं कर पाती। विधवा पुर्नविवाह के कारण सामाजिक विचारधारा में सुधार जरूर आया है, मगर पूर्ण परिवर्तन अब भी शेष है।

'अ अस्तु का' उपन्यास में भावनिक समस्या को चित्रित किया है। उपन्यास की अस्तु जिसे हमेशा होने और ना होने की समस्या भावनिक रूप से सताती है। उसे इस बात का डर लगता है, कि अगर कहीं पेड दिखना बंद हो जाए तो? एक दिन कभी आसमान ही ना दिखाई दे तो? कभी-कभी उसे लगता है, जैसे मानो वह पूरी तरह से साँस नहीं ले पा रही है। उसे लगता है, उसे पूरी साँस आती ही नहीं। इसी दुविधा में उसका मन हमेशा अटका रहता है। ये सब बातें अस्तु के भावनिक छटपटाहट को दिखाती है। यहाँ आम नारी के माध्यम से हर नारी में चलने वाली भावनिक दुविधा को चित्रित किया है। आज भी भावनिक दौर से कई सारी महिलाएँ गुजरती हैं।

निष्कर्ष:

ज्योत्स्ना मिलन का साहित्य आम नारी पर केंद्रित है। नारी जीवन से जुड़ी सामान्य से सामान्य समस्या को उन्होंने अपने लेखन का विषय बनाया है। नारी संदर्भ में विवाह की समस्या, सामाजिक समस्या, अनमेल विवाह, अंधविश्वास, भावनिक समस्या आदि समस्याओं को चित्रित किया है। इन समस्याओं का नारी जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव दिखाया है। यही समस्याएँ आज भी आम नारी के जीवन में पाई जाती है, जिसका यथार्थ चित्रण लेखिका ने किया है। आज शिक्षा के कारण नारी जीवन में काफी परिवर्तन आया है। वह आत्मनिर्भर बन रही है, फिर भी आम नारी का जीवन संघर्ष अब भी जारी है।

उसके प्रति समाज की सोच को बदलना आवश्यक है। जब तक विचारों में परिवर्तन नहीं होगा, तब तक आम नारी का जीवन स्तर सभी दृष्टि से परिवर्तित होना असंभव है।

संदर्भ ग्रंथ:

ज्योत्स्ना मिलनः अपने साथ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1976 पृ.सं.23

ज्योत्स्ना मिलनः केशर माँ, हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया, नई दिल्ली, 2011

ज्योत्स्ना मिलनः अ अस्तु का, हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया, नई दिल्ली, 2009

ज्योत्स्ना मिलनः संस्मरण, स्मृति होते-होते, सूर्य प्रकाशन मंदिर बिकानेर, सं 2010

ज्योत्स्ना मिलनः कहते कहते बात को, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013